विचक्षणा ज्ञान

मनुष्य में पशुत्व के गुण जन्म से ही विद्यमान होते हैं। शैशव में केवल खाना, पीना, सोना आदि कर्म ही किए जाते हैं। इसे पशुत्व या बचपन कह सकते हैं। इसके बाद बाल्यावस्था आती है। इस अवस्था में व्यक्ति के शरीर के साथ साथ मन का भी निर्माण होता है। मन अर्थात माइंड जिसमें बुद्धि भी सम्मिलित होती है।

मन बहुत महत्त्वपूर्ण है, अपने आसपास की परिस्थितियों को समझने के लिए, अपनी रक्षा करने के लिए, अपने पोषण के लिए यह मन एक साधन है। बचपन में पहले अपनी रक्षा और पोषण का दायित्व नहीं होता फिर धीरे-धीरे यह सब सीखना पड़ता है। चतुर्दिक वातावरण को समझने के लिए कई विद्याएँ सीखी जाती हैं। जब यौवन आता ह तब शुरु होता है मानसिक संघर्ष।

इस दुनिया में अन्याय से लड़ते लड़ते और स्पर्धा में बने रहने के लिए जवानी का 99.9 प्रतिशत नाश हो जाता है। सबसे प्रथम आने के लिए माँ बाप का दबाव और दूसरी ओर यह देखना कि समाज में सब अपने से महान हैं- यह देख कर साधारण विचक्षणा ज्ञान दूर हो जाता है। फलस्वरूप हत्याएँ, आत्महत्याएँ, मानसिक रोग आदि बुराइयाँ आ जाती है।

जवानी में ही विचक्षणा ज्ञान खो देने पर प्रौढ़ावस्था में इसकी कमी से और ज़्यादा विनाश हो जाता है। कुल, मत, वर्ग, जाति आदि के भेद सामने आ जाते हैं। मै हिन्दू हूँ, मैं मुसलमान हूँ यह सब बताते-बताते दुनिया का सर्वनाश हो रहा है।

सच्चा विचक्षणा ज्ञान क्या है? मिलकर रहने से सुख-सन्तोष मिलता है। दूसरे से आगे निकल जाने की भावना समाज को नष्ट कर रही है-यह समझने की आवश्यकता है।

इस समाज में प्रत्येक व्यक्ति की महत्ता है। हर वर्ग के लोगों से मिल कर बनता है। समाज। इसलिए किसी को भी नीचा न समझे। प्रत्येक व्यक्ति आर वस्तु की अपनी कीमत होती है, कुछ भी और कोई भी अनावश्यक नहीं है-यही विचक्षणा ज्ञान है।

प्रत्येक प्राणी दूसरे पर निर्भर होता है। हर एक प्राणी में पर निर्भरता भी रहती है। सब आत्मनिर्भर नहीं हो सकते यह सब जानना विचक्षणा ज्ञान है।

माता-पिता तथा समाज को बच्चों को यह विचक्षणा ज्ञान सिखाना चाहिए। उसी तरह स्कूल में, कॉलेज में भी गुरु को विद्यार्थियों को आवश्यक विचक्षणा ज्ञान पर श्रद्धा दिखानी चाहिए। स्कूल-कॉलेजों में जीव विज्ञान, भूगोल आदि शास्त्रों की तरह विचक्षणा ज्ञान को भी पाठ्यक्रम में शामिल करना चाहिए। समझ न होने पर भी ज्ञानी की तरह

बोलना, भूख कम होने पर भी ज्यादा खा लेना सब विचक्षणा ज्ञान की कमी के कारण ही होता है।

माता-पिता, शिक्षक तथा समाज के बड़े लोग यदि ध्यानी नहीं होते तो उनमें विचक्षणा ज्ञान नहीं होता। इसी कारण उनमें क्रोध, आवेश आदि भाव आ जाते हैं।

ध्यान शास्त्र ही सभी लोगों में विचक्षणा ज्ञान दे सकता है। ध्यान शास्त्र का मतलब है-हमेशा मन और बुद्धि को प्रशांति से रखने वाला शास्त्र। अन्यथा कई इच्छाओं से मन और विपरीत विचारों से बुद्धि अस्तव्यस्त हो जाती है। जहाँ ध्यानशास्त्र और ध्यानाभ्यास द्वारा मन, बुद्धि आदि शांति से रहते हैं, वहाँ मन आवश्यक इच्छाओं से और बुद्धि अच्छे विज्ञान से प्रकाशित होती रहती है।

जंगली समाज को यदि सम्य बनाना है तो पहले वहाँ के मनुष्यों में सभ्यता आनी चाहिए। जंगलीपन अर्थात् विचक्षणा ज्ञान की कमी। ज्ञान ही सभ्यता है। अत: ध्यान शास्त्र ही असभ्य मूखों को सभ्य बना सकता है।